रविवार, दिनाँक 09-04-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

सांवले चरण लगदे हिन प्यारे मैनूं, जिन्हां मोह लई सृष्टि सारी ए।
इक मोह लये प्यारे बलधारी मेरे, दूजी मोह लई सीता प्यारी ए।
नाम जप लवो उस बली दा भैणों, जिन्हां उमर चरणां विच गुज़ारी ए।
इक पासे बैठे रघुनाथ जी प्यारे, दूजे पासे लक्ष्मण ब्रह्मचारी ए।
भैणां नूं चाह है मिलने दी, हुण मिला देवो मेरे बलधारी ए।
सारी उमर कर्म करदियां बीती, हुण मैं आइयां शरण तुम्हारी ए।
भैणों नाम दा सन्दूकचा तैयार करो, महाबीर जी मिलावन धनुषधारी ए।
दासी विनती ए गुज़ारदी ए, हुण तारो सृष्टि सारी ए।

इस भजन के द्वारा सजनों सच्चेपातशाह जी, परमात्मा के प्रति अपने प्रेम की गहराई को दर्शाते हुए व सभी को उत्साहित करते हुए कहते हैं कि जैसे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी व सीता महारानी सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के प्रति समर्पित रहे वैसे ही हम भी, जो उनकी विचारधारा यानि जीवन शैली है, उसको सहर्ष अपनाने के प्रति समर्पित हैं यानि तत्पर हैं। इस सन्दर्भ में अन्य सजनों को भी कुरस्ते से हटाकर सद्मार्ग पर लाने के लिए वे सबको आवाहन देते हैं कि आप भी सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के संग हो लो और अपने जीवन का उद्धार करने में समर्थ हो जाओ। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों आप सभी को ज्ञात हो कि यहाँ चरणों का अर्थ पाँवों से नहीं अपितु प्रभु की विचारधारा व आचरण से है। इस सन्दर्भ में जानो कि जो भी मानव धर्म के अनुकूल आचरण पर स्थिरता से बने रहने हेतु किसी प्रकार का त्याग करने से नहीं सकुचाता, वह सदा सद्भाव अपनाकर अपने जीवन को परोपकार प्रवृत्ति के अनुसार आगे बढ़ाता चला जाता है। इस प्रकार ऐसा मानव सदा सुकर्म ही करता है और उसके अन्तर्घट में सुकर्मों का राज स्थापित हो जाता है यानि वह निष्काम भाव से सुकर्म करता हुआ कर्मफल से आज़ाद हो जाता है। आशय यह है कि निष्कामता से सुकर्म करना अपने आप में निष्काम होने का प्रतीक होता है। अब यह तो सब

जानते ही हैं कि निष्पाप कौन होता है - निष्पाप परमात्मा है अर्थात जहाँ निष्पापता का भाव है, वहाँ परमात्मा अपना आप है। इस तथ्य से सजनों हमने सीख लेनी है और ऐसा सुनिश्चित करने के प्रति अपने मन में मज़बूत भावना जाग्रत करनी है ताकि हम भी आजीवन सद्मार्ग पर बने रहते हुए व निर्विकारिता से जीवन जीते हुए अन्त अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाएँ। इस विषय में सजनों सबने अब अपने कलुषित भाव-स्वभावों को पलटा खिलाने का यत्न करना है। याद रखो जब तक हम ऐसा नहीं करते और परमार्थ के नीति-नियम अनुसार खुद को नहीं ढालते, तब तक हम अशान्त ही रहेंगे। अब जिसके मन में अशान्ति होती है, वह उसके विघ्नकारी प्रभाव से अपने लिए व सबके लिए हानिकारक साबित होता ही होता है। सो अपने साथ अब इन्साफ करना और ऐसा मत होने देना। अब आगे कीर्तन सुनो व बोलोः-

(श्री राम चन्द्र जी के मुख के शब्द)

श्री साजन जी को कह रहे हैं

आओ मेरा प्यारा ओ दिलबर हमारा, आओ मेरा प्यारा।

कैसा है ओ नज़ारा ओ दिलबर हमारा, कैसा है ओ नज़ारा।।

दिल लैं गियों दिल तैं खसिया ओ दिल चुराने वाला।

आओ मेरा प्यारा ओ दिलबर हमारा, आओ मेरा प्यारा।।

दिल लैं गियों तूं मेरा, मैं हूं तेरा तूं है मेरा।

तेरा कैसा प्रेम निहारा ओ दिलबर हमारा, तेरा कैसा प्रेम निहारा।।

तेरा प्रेम आके अड़िया, उस प्रेम विच मैं फड़िया।

तेरा कैसा खेल खिलारा ओ दिलबर हमारा, तेरा कैसा खेल खिलारा।।

जदों प्रेम मेरे नाल पाया, वस प्रेम दे मैं आया।

तेरा कैसा है चमकारा ओ दिलबर हमारा, तेरा कैसा है चमकारा।।

अपना आप तैं ही जाना अपना आप ही पहचाना।

हो ओ३म् दे ही अन्दर सिरजनहार है नाम तुम्हारा।।

ध्वनिः-

आहा मुरली पई वजदी ए, कैसी पई सजदी ए।

ओ नज़री नहीं पैंदी, आवाज़ा पई देंदी ए।

ओ नज़री नहीं पैंदी, आवाज़ा पई देंदी ए।।

आहा दिल नू खसदी ए, ओ दिल चुरांदी ए।

नज़री नहीं पैंदी, आवाज़ा पई देंदी ए।।

सजनों अगर यह कीर्तन आपने ध्यान से सुना है तो आपको निश्चित रूप से समझ आ गया होगा कि इस कीर्तन द्वारा परमात्मा का सच्चेपातशाह जी को क्या सन्देश है। अब जिसको यह सन्देश अच्छा लगा है वह यह मान ले कि यह धारणीय है क्योंकि इस सन्देश में जो विचार विदित हैं या जिस प्रकार की निर्मल बात का वर्णन हुआ है, वह अपने आप में अनूठी है। इस बात से हमें समझना चाहिए कि वास्तविक रूप से अपने ख़्याल यानि सुरत को बैहरुनी वृत्ति से हटाकर अन्दरुनी वृत्ति में साधने की यह महत्त्वपूर्ण सार्थक बात है। अब यह कार्य सिद्ध कैसे करना है? - इसकी युक्ति सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते आप सबके पास है। इस युक्ति के प्रयोग द्वारा आप निरन्तर क्रिया करते हुए वांछित परिणाम प्राप्त कर सकते हो। यहाँ क्रिया से तात्पर्य ख़्याल यानि सुरत को ध्यान वल व ध्यान को प्रकाश वल निरन्तर साधे रखने से है ताकि हृदय में निरन्तर प्रकाशमय अवस्था बनी रहे। यहाँ सजनों जानो कि जब हृदय प्रकाशमान होता है तो ख़्याल सदा जाग्रत अवस्था में सतर्क बना रहता है और जीवन की हर ऊँच-नीच को समझते हुए एकरस जीवन को निष्काम भाव से आगे बढ़ाना आवश्यक समझता है। इसी के साथ जब सजन का हृदय प्रकाशमान हो जाता है तो उसके सद्प्रभाव से शरीर का रोम-रोम, रग-रग सब प्रकाशित हो जाता है। ऐसा होने पर अपने इलाही तेजोमय आत्म-स्वरूप की समझ आ

जाती है और अन्तर्घट में संगीतमय वातावरण पनपता है। इस संगीतमय वातावरण में फिर आत्मिकज्ञान का प्रवाह चलता है। इस तरह इन्सान स्वयंमेव आत्मिकज्ञान प्राप्त करने के योग्य बन जाता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों इस युक्ति को प्रेम-संगत प्रवान करते हुए अपने ख़्याल पर सतर्क रहो। यहाँ सतर्कता से तात्पर्य अपने ख़्याल यानि सुरत को मूल-मन्त्र 'आद् अक्षर जो है अमर आत्मा' उस संग निरन्तर जोड़े रखने से है। ऐसा होने पर ही दिव्य प्रकाश/ज्ञान का प्रवाह निरन्तर आपको प्राप्त हो सकता है और आप ओजस्वी-तेजस्वी बन व आत्म-स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर आत्मीयता के गुण धारण करने के योग्य बन सकते हो। ऐसा होने पर फिर जगत से कुछ नहीं धारण करना पड़ता क्योंकि तब इन्सान अपने वास्तविक भाव-स्वभावों पर अटलता से बने रहने हेतु कुछ भी त्यागने से नहीं सकुचाता। इस तरह वह अपने जीवन में निष्पाप आगे बढ़ता जाता है। सजनों यह कोई ऐसी-वैसी लम्बी बात नहीं है जिसे करने में हम अपने आप को असक्षम पाते हैं अपितु यह तो एक बार परमेश्वर का हुक्म यानि आज्ञा पालन करने की बात है। जानो जब एक बार परमेश्वर का हुक्म पालन करने का स्वभाव बन जाता है तो काम सहज और सरल हो जाता है। स्पष्ट है कि अपने वास्तविक रूप से स्वाभाविक निर्माण कर यथार्थतापूर्ण जीवन जीने के काबिल बनने के लिए इसके अतिरिक्त कोई युक्ति नहीं है।

इस सन्दर्भ में हमारी सबसे प्रार्थना है कि इस महान युक्ति को प्रवान करो और आत्म-निर्भर होकर आत्म-विश्वास के साथ जीवन को निष्पाप आगे बढ़ाते हुए अपने जीवन की बाज़ी जीत लो। जानो यह खुद पर खुद पहरा रखने की व खुद को खुद सुधारने की बात है। अन्य शब्दों में यह खुद को खुद वास्तविकता अनुरूप ढालकर स्थिरता/सुदृढ़ता से आजीवन आत्मस्वरूप में स्थित बने रहने की महान बात है। जानो जो भी ऐसा पुरुषार्थ दिखाता है, उसी का जीवन महान बन पाता है। सो अगर अपना सजन आप बनना चाहते हो तो ऐसा अद्म्य पुरुषार्थ दिखाओ। ऐसा करने हेतु सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, जिसमें परिपूर्णतया आत्मिकज्ञान का वर्णन है, वह तो आपके पास है ही। इस ज्ञान का अनुशीलन कर आप स्वयं तो सहज ही परमार्थ के रास्ते पर आगे बढ़ सकते हो, साथ ही अपने परिवारजनों को भी इस नेक कार्य में सम्मिलित कर अपना स्वार्थी फ़र्ज अदा हँसकर करने में सफल हो सकते हो। यदि चाहते हो कि ऐसा ही हो तो इसके प्रति ध्यान दो और आत्म निरीक्षण कर

जो वांछित सुधार स्वयं में लाना आवश्यक है, उसको लाने में और विलम्ब न करो क्योंकि ऐसा करना नुक्सानदायक साबित होगा। इस नुक्सान से बचने के लिए अपने सजन आप बनो। अब ध्यान से कीर्तन सुनोः-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

हर संग तुम्हारे नाल, ओ साजन हर्षवन्द हो चलियो।

हनुमान जी प्रबन्ध करेंगे, सीस चरणां ते धरियो।

हो हो हो सीस चरणां ते धरियो।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

हनुमान जी दे चरण ओ दयालु जी सीस ताज हमारे।

है अमर नाम उस शहनशाह दा, कैसे लगदे ने प्यारे।

हो हो हो कैसे लगदे ने प्यारे।।

(श्री हनुमान जी कह रहे हैं)

सूरत इलाही साजन जी दी इस जग तों निराली है।

नगर निवासी इन्सान इस द्वारे ते सवाली है, द्वारे ते सवाली है।।

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

स्वतन्त्र है युक्ति हनुमान जी दी, इस जग तों निराली है।

परख लैंदा जेहड़ा फिर ओ युक्ति सुखाली है, फिर युक्ति सुखाली है।।

(श्री हनुमान जी कह रहे हैं)

श्री राम चरणों में आके स्वरूप नूं पाके ओ हो गया मालो माली है।

ब्रह्म नाल ओ ब्रह्म हो गया, फिर चमक उसे दी सारी है फिर चमक उसे दी सारी है।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

खावन पीवन विच दिन न बिताइयो निंद्रा विच न रात।

नाम ध्यान विच इस्थर रहियो, जपियो अजपा जाप।।

पालना करो हनुमान जी दे वचनां दी, पकड़ियो अपना आप।

फिर खालस सोना खोट न राहवे, ज्योति स्वरूप दा पाइयो प्रकाश उस रूप दा पाइयो प्रकाश।।

सजनों उपरोक्त कीर्तन में सर्वोत्तम स्वतन्त्र भाव जो कि अपनाने योग्य है, उसका वर्णन किया गया है। जानो यह भाव सुरत की स्वतन्त्रता का प्रतीक है, अभी तो आप बन्धनमान हो। आशय यह है कि इस कीर्तन के माध्यम से सच्चेपातशाह जी भगत शिरोमणि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की उपमा गाते हुए उनके इष्ट देव राजा रामचन्द्र जी को कहते हैं कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का हर वचन हमारे लिए सीस-ताज है क्योंकि उनका हर वचन धारण कर व्यवहार में उतारने योग्य है। इस सन्दर्भ में वह आगे कहते हैं कि आज तक जो हमारा जीवन व्यतीत हुआ, उसमें हमारी अपने माता-पिता, बन्धु-सखा या संसारी गुरु के प्रति निर्भरता थी और इसी कारण हम यथार्थ रूप से जीवन जीने की युक्ति सीखने के प्रति वहाँ से कुछ प्राप्त नहीं कर पा रहे थे परन्तु अब तो उस सर्व महान दाता ने हमें उस युक्ति का जो कि अपने आप में स्वतन्त्र है व किसी बन्धन में नहीं बाँधती, उसका भान कराया है। इसी युक्ति द्वारा हमें अपनी उस अमरता का, जो कि जीवन की वास्तविकता है, बोध हुआ है व इसी द्वारा हमारा ख़्याल-ध्यान मनुराज के पंजें से स्वतन्त्र होकर आत्म-स्वरूप में स्थित हो गया है यानि अपने सच्चे घर पहुँच गया है। यहाँ अपने

घर से तात्पर्य आत्म-स्वरूप जो हमारी आत्मा है और उसमें जो परमात्मा है, उसका दर्शन करने से है। इसी से अपनी वास्तविकता समझ में आती है। इस परिप्रेक्ष्य में जैसे ही हमारा ख्याल उस आत्म-स्वरूप के साथ जा जुड़ता है तो उसे परमतत्त्व का ज्ञान हो जाता है। अतः सजनों मानो कि अपने आप से जुड़ने की इससे आसान कोई और युक्ति नहीं है और न ही यह युक्ति किसी और के पास है। इसीलिए तो सच्चेपातशाह जी आजीवन सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के प्रति हर प्रकार से समर्पित अवस्था में बने रहे और उसका लाभ उन्हें त्रिलोकी के राज के रूप में प्राप्त हुआ। इस तरह उनका जीवन परम-पवित्रता का प्रतीक बन गया। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों हम सबके लिए बनता है कि हम जो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचन हर मानव को मानव धर्म अनुसार जीवन जीने के योग्य बनाने के लिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित हैं, उन्हें ध्यान से पढ़ने-समझने व वर्त-वर्ताव में लाए ताकि हम व हमारा परिवार मानसिक रूप से वैसा ही सशक्त बन सके। सजनों यही सबके प्रति सजनता है। इस सजनता के तहत कोई अपना-पराया नहीं होता। यदि इस भाव को सजनों अपनाते हो तो ही अपना जो माता-पिता के रूप में बच्चों को सदाचारिता का प्रतीक बनाने का कर्त्तव्य है, उसको ठीक ढंग से निभा सकते हो। अन्यथा तो इस युक्ति के विपरीत उन्हें जीवन का दर्शन कराना अपना जीवन आप बर्बाद करने की बात है और अपने ही बच्चों को कुरस्ते चढ़ाने की बात है यानि अपने जीवन का सुख-चैन खुद ही खोने की बात है। इस नीति-नियम को सजनों स्मृति में रखने हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का चिन्तन व मनन करना ही होगा। इसके बगैर आप खुद को या परिवार को सम्भालकर सकारात्मक वातावरण में लाने के प्रति सफल नहीं हो सकते। यहाँ आपने याद रखना है कि जब तक किसी भी मानव की सुरत यानि ख़्याल कंचनता का प्रतीक नहीं बनता अर्थात नकारात्मक बना रहता है तब तक वह शारीरिक, मानसिक व चारित्रिक रूप से स्वस्थ नहीं रह सकता। जब स्वस्थ व स्वच्छ नहीं रह पाता तो वह पवित्रता का प्रतीक नहीं बन पाता। इस तरह वह दुष्चरित्र इन्सान अपना जीवन बर्बाद कर बैठता है। इस बात को समझते हुए सजनों आपको देखना है कि आपके ख़्याल का स्वरूप सकारात्मक है या नकारात्मक है? यदि वह नकारात्मक है तो मान लो कि हम सारा दिन अपने शरीर व मन को नकरात्मकता द्वारा सींचते हैं। इसके विपरीत यदि हमारा ख़्याल सकारात्मक है तो हम अपने मन व शरीर का सकारात्मकता से सींचन कर आत्मोद्धार की तरफ बढ़ रहे हैं। इस तथ्य के दृष्टिगत ख़्याल की सकारात्मकता का बहुत महत्त्व है। इस बात को समझते हुए सजनों जीवन की हर परिस्थिति में अपना ख़्याल सुदृढ़ता से सकारात्मक अवस्था में साधे रखो। ऐसे ही बच्चों की पालना करने के योग्य बनो और उन्हें समझाओ कि द्यण्दृद्वढ़ण्द्य

द्रब्द्विदृड़ङ्कघ्र्घ्र द्रदृघ्रत्घ्यत्ध्ङ्क रखना अत्यन्त आवश्यक है। इसी के द्वारा भयंकर से भी भयंकर दुनियावी रोग सहजता से ठीक हो सकते हैं।

इस सन्दर्भ में हम तो यही कहेंगे कि जीवन में जो भी धारण करो वह विचार कर धारण करो। अन्य शब्दों में आपकी धारणा निर्मल हो, सात्विक हो यानि सत्य का प्रतीक हो और वही सत्य आपके व्यवहार में उतरे। ऐसा होने पर ही आप हृष्ट-पुष्ट रह सकते हो और आपका जीवन आनन्द से भर सकता है। सो इसे आनन्दमय जीवन के प्रति सजग रहने की कुन्जी मानो और इस कुन्जी को लगाकर अपनी किस्मत का ताला आप खोलो व खुशकिस्मत बन जाओ। अतः अब से सजनों होशियार रहो कि भूलकर भी आपके ख़्याल में नकारात्मकता का भाव न चले। यदि ऐसा हुआ तो वैसी ही आपकी बुरी भावना बनेगी और भावना अनुरूप सब बुरा ही नज़र आएगा व फिर बुरे ही कर्म करोगे। ऐसा होने पर यदि परमात्मा सदृश्य भी हुआ तो भी वह निगाह में नहीं आएगा। आशय यह है कि इतनी प्रकाशमय अवस्था में भी अन्धकार नज़र आएगा। ऐसा न हो इस हेतु सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का कहना मानो और अपने सजन आप बन अपना जीवन सकार्थ कर लो।

इसी सफलता की ओर अब हम अगले महीने दिनाँक सात मई से आगे बढ़ने लगे हैं क्योंकि इस तिथि से ध्यानकक्ष में फिर से कक्षाएँ लगने लगी हैं। यह कक्षाएँ हर रविवार को लगा करेंगी और इनकी अवधि लगभग ४५ मिनट की होगी। सो अब ड्डत्ढ़त्द्यड्डथ् माध्यम से आपको व आज की ढ़ङ्कदङ्कद्धड्डद्यत्दृद को समझाने का प्रयास किया जाएगा। यहाँ एक बात और जान लो कि यह क्लास केवल सत्संगियों तक ही सीमित नहीं होगी अपितु इसमें कोई भी बाहर का आपका भाई, मित्र, बन्धु, सगा-सम्बन्धी रजिस्टर करा सकता है। इस बात की सूचना आप सबको दे सकते हो। यहाँ हम पहले भी आपको यह चेतावनी दे चुके हैं और अब फिर से वही चेतावनी दोहरा रहे हैं कि पुरुषार्थ दिखाओ, पुरुषार्थ दिखाओ अन्यथा ऐसा न हो कि पिछड़ जाने के कारण जो अन्य जीव जगत में आ रहे हैं, वे आपका स्थान ले लें और आप कहीं भी नज़र न आओ। सो अभी से इस चेतावनी को समझो और अपनी जगह पर मज़बूती से बने रहने का प्रयास करो। इस हेतु अभी से ही एक-दूसरे को उत्साहित कर सपरिवार इस क्लास को अटैण्ड करो। जानो ऐसा करने से इन कक्षाओं का लाभ आप तक जल्दी पहुँचेगा क्योंकि तब परिवार के सारे सदस्य एक ही प्रकार के स्वभावों में ढल एक साथ एक राह पर आगे बढ़ेंगे और कोई किसी के मार्ग में बाधा उत्पन्न

नहीं करेगा। सजनों मानो कि यह कक्षाएँ अपने आप में कलियुग के भाव-स्वभावों से मुक्ति पा सतयुग के भाव-स्वभावों के प्रति हर मानव को काबिल बनाने हेतु लगाई जा रही हैं। सो अगर कलियुगी मार-पछाड़ से बचना चाहते हो तो अभी से आपको होश में आना पड़ेगा और होश में आकर अपने

बच्चों व संगी-साथियों को सम्भालना पड़ेगा अन्यथा जो दुःख उनको परेशान करेगा उस नकारात्मकता से आप भी आज़ादी नहीं पा सकोगे। यहाँ आप सब स्वीकारोगे कि हर इन्सान के लिए इस नकारात्मकता से आज़ादी प्राप्त कर मानसिक तौर पर हर परिस्थिति में एक अवस्था में सधे रहना अति आवश्यक है। ऐसा होने पर ही सुरत-शब्द का श्वास-प्रति-श्वास यानि क्षण-प्रति-क्षण योग बना रह सकेगा और आप हर परिस्थिति में एकता, एक-अवस्था में बने रहने के योग्य बन सर्व समर्थ बन पाओगे। जानो अपने आप में सर्व-समर्थ बनना दुनियाँ में कुछ भी कर पाने के योग्य बन सबसे बड़ा ईनाम प्राप्त करने की बात है। ऐसा होने पर ही मानव जीवन सफल हो सकता है। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों आपने हर सजन से बात करनी है।

याद रखो इन कक्षाओं के तहत बात शुरु से आरम्भ होगी। इस बात के माध्यम से हर मानव को नैतिकता का पाठ पढ़ाकर परमार्थ का रास्ता अपनाने के लिए प्रेरित किया जाएगा। इस बात को समझते हुए संसार की तरफ से अपना ख़्याल हटाकर परम अर्थ के प्रति अपना जीवन समर्पित कर दो। ऐसा करने पर ही जीवन के हर क्षण का भरपूर लाभ उठा पाओगे। इस लाभ को प्राप्त करने के लिए आज का यह सन्देश जन-जन तक पहुँचाओ क्योंकि यह 'द्वारा' सबका सांझा है और यहाँ पर प्रकाशित आत्मज्ञान का स्त्रोत सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी कुल सृष्टि का है। अन्य शब्दों में यह ग्रन्थ आपकी, हमारी किसी की भी जायदाद नहीं है अपितु यह ग्रन्थ सबका है। सो इस नीति-नियम के अनुसार जीवन का विचारयुक्त रास्ता अपनाने के प्रति सबको जागृति में लाने का पुरुषार्थ दिखाओ। यहाँ याद रखो कि यह कार्य किसी ने 'मैं' भाव में आकर नहीं करना। यदि ऐसा किया तो 'मैं' में आकर थक जाओगे और रुक जाओगे। इस तरह किसी से आदर प्राप्त करने की उम्मीद में 'तूँ-मैं' का सवाल खड़ा हो जाएगा और इससे लाभ प्राप्ति होने की बजाए बहुत बड़ा नुक्सान हो जाएगा। इसलिए कह रहे हैं कि इस कार्य को समर्पित भाव से करना। याद रखो समर्पित भाव कहता है कि मैं भी परमार्थ के रास्ते पर आगे बढ़ूँ और अन्यों को

भी कन्धे से कन्धा मिलाकर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करूँ। सो किसी को नीचे नहीं लगाना और न ही अपने सामने किसी को झुकाना है। यहाँ याद रखना है कि यह कक्षाएँ परमार्थ यानि परम अर्थ की सिद्धि के निमित्त हैं और इसमें कोई फीस नहीं है। यहाँ तो केल सीस अर्पण करना है और भाव-स्वाभाविक परिवर्तन को दिल से स्वीकारना है। इस प्रकार सीढ़ी-दर-सीढ़ी परिवर्तन की सीढ़ी चढ़ते हुए ख़्याल को मनुराज के पन्जे से ऊपर उठाकर अपने स्थान पर स्थित कर लेना है। ऐसा होने पर आप आत्मज्ञानी बन जाओगे। अब जहाँ आत्मज्ञान है, वहीं ब्रह्मज्ञान है। ब्रह्मज्ञानी के लिए कोई दूसरा नहीं होता। ब्रह्मज्ञान कहता है कि 'सर्व मैं हूँ, मै हूँ सर्व' और मैं ही दिलों की जानने वाला हूँ व त्रिकालदर्शी हूँ। जानो यह अपनी सर्व-शक्तियों को जानते हुए और उनको सदुपयोग में लाते हुए परोपकार कमाने की मंगलकारी बात है। ऐसे में अपने मंगल के साथ-साथ सबका मंगल हो, उस हेतु समय का योगदान तो देना ही होगा और निरन्तरता बनाए रखनी होगी। आशय यह है कि यदि एक भी क्लास बीच में छूट गई तो लिंक टूट जाएगा और आप कमज़ोर पड़ जाओगे क्योंकि आपको समझ नहीं आएगी और दो सीढ़ी इकट्ठे कैसे चढ़ पाओगे। सो हर हाल में आपने यह क्लास अटैण्ड करनी ही करनी है। इसी के साथ आप में से जो सजन द्यङ्कठ्ठड़ण्त्दढ़ द्रद्धदृढङ्कम्न्नत्दृद में हैं और क्लास लेने के योग्य हैं व दूसरों तक समझदारी से बात पहुँचा सकते हैं (चाहे वे स्त्री हैं या पुरुष, लड़का है या लड़की) वे अपना नाम दे सकते हैं। सो जिनके पास भी यह विशेष गुण है, जो बात को ठ्ठम्न त्द्य त्म्न आगे पहुँचा सकते हैं, उन्होंने अपने गुण का सदुपयोग करना है। इससे उनके इस गुण पर भी निखार आएगा ही आएगा। हमारे हिसाब से इसमें किसी को कोई मुश्किल नहीं होनी चाहिए।

कक्षाओं का समय सत्संग के बाद होगा व आपको बता दिया जाएगा। यह सजनों इसलिए भी कह रहे हैं कि यह साल ट्रस्ट की जितनी भी गतिविधियाँ हैं, उन सबमें भरपूर उन्नति करने के प्रयास के रूप में मनाया जाएगा। इस प्रयास में परमार्थ के हित के दृष्टिगत हर सदस्य ने सहर्ष अपना योगदान देना है और सम्पर्क में आने वाले हर सजन को त्दध्दृथ्ध्ङ्क करना है। आशय यह है कि मानवता का पाठ पढ़ाने की इस मुहिम में हर सजन की भागेदारी होनी चाहिए।

आप सब ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभ कामनाओं सहित।